IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दादा भाई नौरोजी के विचारों का विश्लेषणपरक अध्ययन

(Dada Bhai Naorozi Ke Vicharon Ka Vishleshanaparak Adhyayan)

कृष्ण लाल

सहायक आचार्य राजनीति विज्ञान

सेठ श्री केदारनाथ मोदी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय

गुढ़ा गौडजी, झुन्झुनूं, (राजस्थान), भारत

शोध सारांश

दादाभाई नौरोजी एक ऐसे उत्कृष्ट बुद्धिजीवी और निःस्वार्थ देशभक्त थे जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र की सेवा में समर्पित कर दिया। सभी उन्हें प्यार और आदर से भारत का महान युगपुरुष और भारतीय राष्ट्रवाद का जनक कहते थे। दादाभाई नौरोजी ब्रिटिशकालीन भारत के एक पारसी बुद्धिजीवी, शिक्षाशास्त्री, कपास के व्यापारी तथा आरम्भिक राजनैतिक एवं सामाजिक नेता थे। दादाभाई नौरोजी ने भारत में विश्वविद्यालयों की स्थापना के पूर्व के दिनों में एलफिंस्टन इंस्टीटयूट में शिक्षा पाई जहाँ के ये मेधावी छात्र थे। उसी संस्थान में अध्यापक के रूप में जीवन आरंभ कर आगे चलकर वहीं वे गणित के प्रोफेसर हुए, जो उन दिनों भारतीयों के लिए शैक्षणिक संस्थाओं में सर्वोच्च पद था। साथ में उन्होंने समाजसुधार कार्यों में अग्रगामी और कई धार्मिक तथा साहित्य संघटनों के, यथा स्टूडेंट्स लिटरेरी ऐंड सांइटिफिक सोसाइटी के, प्रतिष्ठाता के रूप में अपना विशेष स्थान बनाया। उसकी दो शाखाएँ थीं, एक मराठी ज्ञानप्रसारक मंडली और दूसरी गुजराती ज्ञानप्रसारक मंडली। रहनुमाई सभी की भी स्थापना इन्होंने की थी। दादा भाई नौरोजी उदारवादी, न्यायवादी एवं मानवतावादी नेताओं में से एक थे। उनका विचार था कि सरकार पशु बल पर आधारित न होकर नैतिक बल पर आधारित होनी चाहिये ।

शब्द कुजी :—शिक्षाशास्त्री, अर्थशास्त्री, समाजवादी, आर्थिक, राष्ट्रवाद, नैतिक, मानवतावादी।

प्रस्तावना :

नौरोजी एक विचारक की अपेक्षा एक कुशल अर्थशास्त्री थे। उन्होंने व्यावहारिक राजनीति में सक्रिय भाग लेकर भारत की आर्थिक समस्याओं पर प्रकाश डाला और राष्ट्रीयता को झकझोर कर उद्वेलित कर दिया। उन्होंने भारतीयों को उनकी आर्थिक निर्बलता का ज्ञान कराकर उन्हें गरीबी, भुखमरी, शोषण, अकाल तथा महामारी आदि के विरुद्ध युद्ध ज्ञान कराकर करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने तर्कशील अर्थशास्त्री की भाँति अपने मत के समर्थन में अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये। दादा भाई नौरोजी को एक प्रमुख उदारवादी (नरमपंथी) विचारक के रूप में जाना जाता है। उनकी पहचान राजनीतिक विचारों की बजाए आर्थिक विचारों के रूप में अपेक्षाकृत ज्यादा होती है।नौरोजी भारत की बदहाल आर्थिक स्थिति गरीबी व पिछड़ापन के लिए अंग्रेजों से पहले चली आ रही भारत की राजनीति व शासकों को जिम्मेदार मानते थे, जिनमें आपसी टकराव व संघर्ष के कारण भारत दरिद्रता के ऐसे दौर में पहुँचा। उन्होंने अपने

विचारों के माध्यम से भारतीय राजनीति व अर्थव्यवस्था को एक आधार प्रदान करने का प्रयास किया जो आगे चलकर भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का हिस्सा बनी और काग्रेस की प्रमुख नीतियों का आधार बनी। नौरोजी स्वयं तीन बार काग्रेस के अध्यक्ष बने। इस तरह कांग्रेस को वैचारिक पृष्ठभूमि प्रदान करने में नौरोजी का अतुल्य योगदान है और कांग्रेस के रूप उनके विचारों की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। ऐसा नहीं है कि नीरोजी जैसे विचारकों ने ब्रिटिश शासन के समक्ष समर्पण कर दिया परन्तु सच्चाई यह है कि उस समय की माँग व आवश्यकता थी। जिस राजनीतिक अनिश्चितता व बिखराव के दौर से भारत गुजरा, सामाजिक रूप से खण्डित भारत और ऐसी कुरीतियाँ समाज पर हावी हुई जिन्होंने समाज का वास्तविक चेहरा ही बदल डाला था। एक समय विश्व का नेतृत्व करने वाला भारत ऐसे दौर में पहुँच गया था जहाँ उसके पास सिवाय आडम्बरों, अनावश्यक बंधनों, जात–पात, ऊँच–नीच, महिला उत्पीड़न के अलावा कुछ नहीं था। उनसे ऊपर उठना व इनसे मुक्ति दिलाना भारत के अस्तित्व का प्रश्न था। ऐसे में नौरोजी ने ब्रिटिश साम्राज्य की छत्रछाया में भारत में सुधारों की आवश्यकता को न केवल महसूस किया, अपितु शुरू करने की पूरी मांग की और यहां तक कहा कि ब्रिटिश शासन की स्थापना किसी दैवीय वरदान से कम नहीं है। जो हमारे समाज में निहित बुराईयों को समाप्त करने के लिए लाया गया है, और हमें पाश्चात्य दर्शन व शिक्षा तथा अंग्रेजों के नेतृत्व कालाभ उठाकर इनसे मुक्ति पाने व भारत के गौरवशाली इतिहास की पहचान को प्राप्त करने की हर संभव कोशिश करनी चाहिए।

शोध अध्ययन के उदेद्श्य

1. दादाभाई नौरोजी का जीवन परिचय का अध्ययन करना।
2. दादाभाई नौरोजी के व्यक्तित्व का अध्ययन करना।
3. दादाभाई नौरोजी के समाजवादी विचारधारा का अध्ययन करना।
4. दादाभाई नौरोजी के आर्थिक, राजनीतिक, नैतिक विचारों की अवधारणा का अध्ययन करना।
5. दादाभाई नौरोजी के विचारों का विश्लेषण करना।

शोध विधि व आंकड़ों का संग्रहण

दादाभाई नौरोजी के विचारों का विश्लेषण करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक आंकडों का प्रयोग किया गया है। आंकडों को विभिन्न पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों आदि से इकट्टा किया गया है।

दादाभाई नौरोजी का जीवन परिचय

नौरोजी पालनजी डोरडी और मानिकबाई के पुत्र दादाभाई नौरोजी का जन्म 4 सितंबर 1825 को बम्बई में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा शहर के एक प्राथमिक विद्यालय में हुई। उनके एक शिक्षक की सलाह पर दादाभाई को माध्यमिक शिक्षा के लिए एल्फिन्स्टन इंस्टीट्यूट (अब एल्फिन्स्टन कालेज), बम्बई भेज दिया गया जहां पर उनका विद्यार्थी–जीवन प्रतिभा से परिपूर्ण रहा तथा उन्होंने वर्ष 1840 में प्रतिष्ठित क्लेयर छात्रवृत्ति सहित अनेक छात्रवृत्तियां और पुरस्कार प्राप्त किए। गणित, प्राकृतिक दर्शन और राजनीतिक अर्थव्यवस्था में दादाभाई की गहरी रुचि थी और वर्ष 1845 में उन्होंने स्नातक की उपाधि प्राप्त को। सात दशक बाद वर्ष 1916 में बम्बई विश्वविद्यालय ने दादाभाई को एलएल.डी. की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् दादाभाई के लब्धप्रतिष्ठ जीवन का प्रारंभ एल्फिन्स्टन इंस्टीट्यूट, बम्बई में नेटिव हेड असिस्टेंट के रूप में हुआ। वर्ष 1850 में, यह गणित तथा प्राकृतिक दर्शन के असिस्टेंट प्रोफेसर नियुक्त हुए और इस प्रकार, उन्होंने इस इंस्टीट्यूट में इस पद पर नियुक्त होने वाले प्रथम भारतीय होने का गौरव प्राप्त किया। वर्ष 1955 में यह "कामा एंड कंपनी" की व्यावसायिक फर्म में साझीदार के रूप में कार्य करने के लिए इंग्लैंड गये। इंग्लैंड में अपने व्यवसाय के अतिरिक्त उन्होंने लन्दन के यूनिवर्सिटी कालेज में गुजराती भाषा को प्रोफेसर के रूप में भी कार्य किया इस पद पर उन्होंने लगभग एक दशक तक कार्य किया।

दादाभाई नौरोजी के आर्थिक विचार

दादाभाई नौरोजी आर्थिक राष्ट्रवाद के जनक थे। उन्होंने आर्थिक दृष्टि से भारतीय राजनीति का विश्लेषण किया और वैज्ञानिक पद्धतियों के अनुसार उसकी व्याख्या की। दादाभाई नौरोजी एक महान उदारवादी विचारक थे। वे कट्टर देशभक्त थे। उन्होंने भारत की दरिद्रता का अनुभव किया था। वे भारत के निर्धनों के मित्र थे। उनकी पुस्तक पावर्टी एण्ड अनब्रिटिश रूल इन इण्डिया (Poverty and unbritish Rule in India) एक महान रचना थी। जिसमें यह स्पष्ट किया गया था कि किस तरह अंग्रेजों की गलत आर्थिक नीतियों के कारण भारत के आर्थिक ढाँचे की जड़ें खोखली हो रही थीं।

उनका कहना था कि अंग्रेजी शासन ने भारत में आर्थिक विषमता का वातावरण उत्पन्न कर दिया है। निर्धनता के कारण भारत निरन्तर पतन के गर्त में गिरता जा रहा है। उन्होंने कठिन परिश्रम कर कुछ आँकड़े एकत्र किये और यह स्पष्ट कर दिया कि ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भारतीय जनता की आर्थिक दशा कितनी अधिक शोचनीय हो गई है। उन्होंने ब्रिटिशों के शोषण का विरोध किया और बिटिश जनता से अपील करते हुए कहा कि, भारत में ब्रिटिश सेना रखने के लिये युद्ध मन्त्रालय को दिये जाने वाले धन, इंगलैंड में प्रशासन पर होने वाले व्यय तथा अंग्रेज व्यापारियों द्वारा भारत से इंगलैंड को भेजी जाने वाली अर्जित आय, के रूप में भारत की अपार सम्पत्ति देश से बाहर खींची जा रही है।

नौरोजी का आर्थिक ड्रेन का सिद्धान्त–

दादाभाई नौरोजी का कथन था कि देश का उत्थान तब तक न होगा जब तक कि भारत से धन का बाहर जाना न रुकेगा, जब तक भारतीयों को अपने देश में प्राकृतिक अधिकार वापस न मिलेंगे। क्या इसके अतिरिक्त भारत के आर्थिक उत्पान की और आशा है।

दादाभाई नौरोजी एक ठोस यथार्थवादी अर्थशास्त्री (Empirical economist) थे। उनमें तथ्य, आंकड़ों और ठोस के प्रति गहरा अनुराग सबूतों । वे कोरे कल्पनाशील अर्थशास्त्रो हीं थे। उन्होंने भारतीय शोषण की स्पष्ट व्याख्या करने के लिये वैज्ञानिक विधियों और तथ्य संसह की प्रविधियों का शोषण का उन्होंने स्पष्ट बताया कि उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में तीस लाख पौण्ड की राशि का शोषण होता था और बाद में यह शोषण बढ़ते–बढ़ते 3 करोड़ पौण्ड तक पहुँच गया। नौरोजी ने अपने तथ्यों एवं आँकड़ों से यह सिद्ध किया की एक भारतवासी की वार्षिक आय 20 रुपये थी। ऐसी परिस्थितियों में विकास की बात सोचना भी गलत था।

आर्थिक शोषण से बचने का उपाय :

दादाभाई नौरोजी आर्थिक शोषण की व्याकर करने के पश्चात् उससे बचने का उपाय भी प्रस्तुत करते थे। उनका मत था भारतीय जनता इस आर्थिक शोषण से मुक्ति पा सकती थी। नौरोजी ने ब्रिटिश सरकार की उन नीतियों पर प्रहार किया जिनमें भारतीय संसाधनों का दोहन अंग्रेजो के द्वारा अपने हितों की पूर्ति के लिए किया जा रहा था। अंग्रेज अपने व्यापार व अल्प आर्थिक क्रियाकलापों के माध्यम से भारतीय धन सम्पदा को ब्रिटेन लेकर जा रहे थे, जिनका लाम भारतीयों को मिलना तो दूर बल्कि भारतीय कुटीर उद्योगों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा था। अंग्रेज भारत से धन कमाकर ब्रिटेन ले जा रहे है जबकि उस पर भारतीय का हक है अर्थात् नौरोजी ने इस सिद्धान्त के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि भारतीय संसाधनों से प्राप्त धन या लाभ का प्रयोग केवल भारतीयों के विकास व उन्नति के लिए खर्च किया जाए न कि ब्रिटेन भेजा जाए। यदि ऐसा हो रहा है तो भारत की आर्थिक स्थिति ओर कमजोर होगी।

अंग्रेजों को सुझाव :

नौरोजी का विचार था कि अंग्रेजों को भारतीयों के सरख समानता का व्यवहार करना चाहिए। वे कहते थे कि जिस प्रकार इंगलैंड के प्रशासन में सेवाएँ विभाग एवं पूरक बातें उन्हीं के देशवासियों के हाथों में हैं, उसी प्रकार हम भारतवासियों के लिये भी चाहते हैं कि सेवायें, विभागादि सभी भारतीयों के हाथों में रहें। यह न केवल अधिकार के बात है और न ही शिक्षित व्यक्तियों की महत्त्वाकांक्षा है वरन् आर्थिक विषमताओं को दूर करने का यह एक मार्ग है।

भारतीयों को सुझाव :

दादाभाई नौरोजी ने आर्थिक विषमता को दूर करने के लिये भारतीयों को स्वदेशी आन्दोलन में भाग लेने का परामर्श दिया। उन्होंने स्वदेशी की व्याख्या करते हुए बताया कि स्वदेशी आन्दोलन कोई आज की वस्तु नहीं है, यह तो जहाँ तक ज्ञात है, बहुत समय से विद्यमान है। मैं कहता हूँ कि इस अप्राकृतिक आर्थिक विषमता में स्वदेशी भारतीयों के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है। जब तक अप्राकृतिक दशा रहेगी, भारतीय बच्चों की उपेक्षा करके 20 करोड़ रुपये वेतन, पेंशन इत्यादि के रूप प में विदेशी बच्चों के लिये खर्च होते रहेंगे।

दोषपूर्ण आर्थिक नीतियों पर प्रहार

ब्रिटिश सरकार जहां भारत की बदहाल आर्थिक स्थिति के लिए बढ़ती हुई जनसंख्या को जिम्मेदार बता रहा थी, वहीं दादा भाई नौरोजी ने अंग्रेजों की उन दोषपूर्ण नीतियों को उत्तरदायी माना जिनके चलते ऐसे हालात पैदा हुए। नौरोजी का कहना था कि अंग्रेजों का एक मात्र उद्देश्य भारत में निहित संसाधनों का दोहन केवल अपने हितों की पूर्ति के लिए करना। जिससे भारत संपत्ति विहिन बन गया। भारत सरकार की व्यापार असन्तुलन की नीति के कारण आयात–निर्यात के कई गुणा अधिक किया गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत और गरीब व ब्रिटेन और सम्पन्न बनता गया। इन्हीं दोषपूर्ण नीतियों के चलते भारतीय कुटीर व लघु उद्योग समाप्त हो गए क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने ब्रिटेन से आयातीत माल पर कर कम दिया और यह माल मशीनों से निर्मित होने के कारण सस्ता भी था ऐसे में भारतीय बाजारों से भारतीय निर्मित माल गायव सा हो गया। इस तरह ब्रिटिश निर्मित माल कके प्रति संरक्षण की नीति ने भारत की अर्थव्यवस्था को धराशाही कर दिया।

दादाभाई नौरोजी के नैतिक विचार

दादाभाई नौरोजी ने आर्थिक शोषण के साथ–साथनैतिक शोषण पर भी विशेष बल दिया। वे आर्थिक शोषण का दूसरा अर्थ नैतिक शोषण से लगाते थे। उनका विचार था कि अंग्रेजी सरकार की नीति शोषण पर आधारित है। वह भारतवासियों को उन नौकरियों से वंचित रखती है जिनसे उन्हें आय प्राप्त हो सके। वह अधिकांश उच्च पद अंग्रेज अफसरों को प्रदान करती है जो अवकाश प्राप्त कर स्वदेश वापस लौट जाते हैं। हैं। भारत उन ब्रिटिश अफसरों की प्रशासकीय योग्यता और गहन अनुभव से वंचित रह जाता दादाभाई नौरोजी कहते हैं कि यह शोषण एक लगातार क्रम में बना हुआ था। अंग्रेजों से पहले आक्रमणकारी आते थे और स्वदेश लौट जाते थे या भारत में ही बस जाते थे। किन्तु अंग्रेजों के शोषण करने की विधियाँ अनेक थीं। पहले आक्रमणकारी तो कसाई के समान थे किन्तु अंग्रेजों ने तेज सर्जरी के चाकुओं के साथ काट–छाँट आरम्भ कर दी और मजाक तो यह था कि यह सब वे अंग्रेज सभ्यता के विकास के नाम पर कर रहे थे। वे भारत को सभ्य बना रहे थे, उसकी सभ्यता का विकास कर रहे थे, इस सर्वांगीण शोषण की प्रक्रिया द्वारा; यह कैसा मजाक था। नौरोजी ने स्पष्ट कर दिया कि इंगलैंड प्रतिवर्ष 3 करोड़ या 4 करोड पौण्ड भारत से हड़प कर रहा था। वह विशाल पूँजी पुनः भारत में आती थी और इसके द्वारा भी शोषण किया जाता था। यह पूँजी भारत से खनिज पदार्थों की विपुल राशि के शोषण में प्रयोग की जाती थी। भारतीयों को तो केवल निम्न पदों पर ही नियुक्त किया जाता था।

दादा भाई नौरोजी के राजनीतिक विचार

दादा भाई नौरोजी एक उदारवादी विचारक है। वे कट्टर देशभक्त भी थे। उन्होंने भारत की दरिद्रता का अध्ययन किया था। उनके विनीतिक विचार उदारवाद (Liberalism) से प्रभावित थे। वे भारत के सामाजिक उत्थान के धर्षक थे। उनका मत था कि भारत का उत्थान उसके नैतिक आदर्शों के अनुसार होना चाहिये। उन्होंने अनेक संस्थाओं की स्थापना की थी। वे राष्ट्रीय कांग्रेस के महान नेताओं में से एक थे। इनके समय में जस्टिस रानाडे का कांग्रेस पर व्यापक प्रभाव था। रानाडे कांग्रेस को एक समाज सधारवादी संस्था बनाना चाहते थे परन्तु नौरोजी कांग्रेस को शुद्ध राजनीतिक संस्था बनाये रखने के पक्ष में थे। उनका मत था कि राष्ट्रीय कांग्रेस को सम्पूर्ण भारत की राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन कर उनके समाधान करने का कार्य सम्पन्न करना चाहिये। उसे धर्म आदि के मामलों में कसकर अपना राष्ट्रीय लक्ष्य नहीं त्याग देना चाहिये, अन्यथा उसका विघटन अवश्यम्भावी हो जायेगा। इस प्रकार उन्होंने अपने प्रयत्नों से कांग्रेस को एक शक्तिशाली राष्ट्रीय संस्था का स्वरूप प्रदान किया जो स्वराज्य जैसे महान उद्देश्य की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील हो गयी।

ब्रिटिश उदारवाद में गहरी आस्था

नौरोजी की ब्रिटिश उदारवादी में गहरी आस्था थी तथा अंग्रेज जाति की न्यायप्रियता में पूर्ण विश्वास था। वे ब्रिटिश राजनीतिक व्यवस्था के लोकतांत्रिक मूल्यों, कानून का शासन, सीमित सरकार के सिद्धान्त तथा न्याय प्रणाली को भारत में स्थापित करने के पक्ष में थे। उनका विश्वास था कि भविष्य में ब्रिटेन में ऐसा राजनीतिक वातावरण बनेगा, जो भारतीयों के साथ न्याय करेगा। उनका यह भी विश्वास था कि जैसे–जैसे भारतीयों में राजनीतिक जागरूकता आएगी तथा वे स्वशासन के योग्य बनेंगे, वैसे ब्रिटिश सरकार उनकी स्वशासन प्रदान करेगी।

ब्रिटिश शासन तथा पाश्चात्य शिक्षा के समर्थक

ब्रिटिश शासन को भारत के लिए वरदान मानते थे। उनका मानना था कि ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत ही भारत की राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षणिक तथा आर्थिक सुधारों को प्राप्त कर सकता है। पाश्चात्य शिक्षा को वे भारत के लिए लाभदायक मानते थे। उनका मानना था कि इससे भारतीयों को सभी प्रकार के परम्परागत बन्धनों अंधविश्वासों तथा अज्ञान के अन्धकार से मुक्ति मिलेगी। इसे वे स्वतन्त्रता, समानता और नेतृत्व के प्रजातांत्रिक मूल्यों क प्रचार–प्रसार में सहायक मानते थे। इसलिए उन्होंने अंग्रेजी के अधिकाधिक प्रचार–प्रसार का समर्थन किया।

सुदृढ़ राष्ट्रीय चरित्र और राष्ट्रीय एकता के समर्थक

किसी भी समाज या राष्ट्र की उन्नति इस बात पर निर्भर करती है कि वहां के लोगों का चरित्र कितना उच्च कोटि का है। यदि लोगों में राष्ट्र के प्रति त्याग, बलिदान, समर्पण, कठोर परिश्रम् ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता, नैतिक, बौद्धिक व शारीरिक दृष्टि से बलशाली आदि गुण विद्यमान है तो सुद्ध राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। नौरोजी ने इसके औचित्य को स्वीकार करते हुए इनकी आवश्यकता पर बल दिया ताकि भारत का नवयुवक अपनी सम्पूर्ण क्षमता व भावना से इस महान् यज्ञ में अपने जीवन की आहुति दे सकें।

ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत ही स्वशासन की मांग

नौरोजी ब्रिटिश शासन का भारतीयों के हित में ईश्वरीय वरदान मानते थे। उनका तर्क था कि भारतीय शाासन में जो दोष उत्पन्न हुए है. उन्हें ब्रिटिश शासन के माध्यम से दूर किया जा सकता है। नौरोजी का कहना था कि अभी भारतीय स्वशासन नहीं चला सकते क्योंकि उन्हें शासन चलाने का अनुभव नहीं है। अतः भारत का हित कंवल इसी में है कि ब्रिटिश साम्राज्य की छत्र–छाया में स्वशासन की स्थापना की जाये। वे भारत में वैसी ही सरकार चाहते थे, जैसी कनाडा तथा अन्य ओपनिवेशिक राज्यों में प्रचलित थी।

संवैधानिक साधनों में गहरी आस्था

राजनीतिक उद्देश्य की प्राप्ति हेतु संवैधानिक साधनों एवं शांतिपूर्वक आन्दोलनों के पक्षधर थे। यद्यपि नौरोजी के इन साधनों का क्रांतिकारी एवं उग्रवादी विचारधारा के लोगों के द्वारा व्यापक विरोध किया गया लेकिन फिर भी नौरोजी अपने विचारा से पीछे नहीं हटे। उनका कहना था कि सवैधानिक साधनों के द्वारा ही ब्रिटिश जनता की सहानुभूति तथा सहयोग प्राप्त किया जा सकता है।

इस प्रकार नौरोजी राजनीतिक शक्ति का आधार नैतिक बल, न्याय, पवित्रता, सद्भावना और पारस्परिक विश्वास को ही मानते थे। उनका विश्वास था कि अंग्रेज एक न्यायप्रिय, उदार, एवं ईमानदार जाति है। उनका मत था कि ब्रिटिश सरकार के अन्तर्गत रहकर भारत एक सभ्य देश बन जायेगा। उन्होंने बार–बार यह कहा कि ब्रिटिश शासन भारत के लिये एक दैवी–कृपा है। वे इंगलैंड की सभ्यता को उन्नत, दयालु और उदार (Advanced Humanitarian Civilization of Britain) समझते थे। पाश्चात्य शिक्षा, प्रशिक्षित प्रशासकीय अधिकारीगण, तकनीकी विकास और रेलवे आदि ने भारत का बहुत उपकार किया है। वे 1858 की महारानी विक्टोरिया की घोषणा से बहुत अधिक प्रभावित हुए थे। जिसमें भारतीयों को समानता का आश्वासन दिया गया था। परन्तु जब उन्होंने देखा कि उक्त घोषणा को भारत में व्यावहारिक रूप नहीं दिया गया है तो उन्होंने भारतीयों के लिये सार्वजनिक सेवाओं में उन सभी अधिकारों की माँग की जो अधिकार अंग्रेजों को प्राप्त थे।

नौरोजी अंग्रेजी नीति से क्षुब्ध हो गये और उन्होंने उनका विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने यह मांग की कि सार्वजनिक सेवाओं में भारतीयों को भी वही अधिकार मिलने चाहिये जो अंग्रेजों को प्राप्त थे। इसके लिए उन्होंने सिविल सर्विस की परीक्षा भारत में ही वायोजित करने की मांग की। इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी मांग की कि जिस प्रकार इंगलैंड में और उपनिवेशों में कर–सम्बन्धी विधायन और कर को व्यय करने की शक्ति जनता के प्रतिनिधियों के हाथों में है, उसी प्रकार भारतवासियों को भी वैसा ही अधिकार होना चाहिये। दादा भाई नौरोजी ने 1904 में लन्दन इण्डियन सोसाइटी के समक्ष स्वराज्य की माँग ही और भारतीय जनता से अपील की कि वह उसके लिये निरन्तर संवैधानिक ढंग से प्रयत्नशील क्योंकि स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत ही माज्य की माँग की।

दादाभाई नौरोजी संवैधानिक और शान्तिपूर्ण आन्दोलन के समर्थक थे। उन्होंने को यह परामर्श दिया कि उन्हें न्याय, स्वतन्त्रता एवं स्वशासन प्राप्त करने के लिये पूर्ण आन्दोलन करना चाहिये। परन्तु ज्यों–ज्यों अंग्रेजों का दमनचक्र चलता गया त्यों–त्यों भारत की दशा शोचनीय होती गई और राजनीतिक वातावरण भी दूषित होता गया। उसे विचार भी समयानुसार परिवर्तित होते गये। इससे पूर्व दादाभाई नौरोजी की ब्रिटिश साम्राज्य अति गहरी श्रद्धा थी। 1886 ई. में उन्होंने घोषित किया था कि वे ब्रिटिश साम्राज्य के सच्चे प कृति गए ई. में उन्होंने लाहौर में कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण में कहा था कि हम चाहते हैं भारत के साथ इंगलैंड का सम्बन्ध एक लम्बे समय तक रहना चाहिये तथा इसे भारत की विश्व के सभ्य राष्ट्रों के बीच भौतिक एवं राजनैतिक उत्थान में मदद करनी चाहिये।

लेकिन धीरे–धीरे दादाभाई नौरोजी को बड़ी निराशाओं का मुँह देखना पड़ा और ब्रिटि सरकार पर से उनका विश्वास उठ गया। 1906 में कलकत्ता में कांग्रेस के अध्यक्षीय भाषण के उन्होंने कहा कि, हमारा विश्वास और भविष्य हमारे साथ है। यदि हम अपने देश के शांत ईमानदार हैं, तो हमें देश के उत्थान के लिये पूर्ण बलिदान करना चाहिये । मुझे जरा भी सन्देह नहीं है कि अंग्रेज जैसे न्यायप्रिय और सच्चे व्यक्ति के साथ व्यवहार करते हुए हमें इस बात का पूर्व विश्वास हो सकता है कि हमारे कार्य व्यर्थ न जायेंगे। हम दया की भीख नहीं माँगते, हम केवस न्याय के इच्छुक हैं। ब्रिटिश नागरिक के समान अधिकारों की घोषणा नहीं चाहते, हम स्वशासन चाहते हैं। इस अधिवेशन में उन्होंने भारतीयों के तीन प्रमुख अधिकारों पर विशेष बल दिया–

(1) स्वराज्य प्राप्ति का अधिकार।
(2) उच्च पदों पर भारतीयों की भारी संख्या में नियुक्ति।
(3) भारत और इंगलैंड में न्यायपूर्ण आर्थिक सम्बन्ध ।

उन्होंने भारत की शोचनीय स्थिति को सुधारने के लिये स्वराज्य की मांग की और स्वदेशी आन्दोलन का प्रचार किया। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा का समर्थन कर विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का नारा लगाया। बंगाल विभाजन से स्वदेशी आन्दोलन तेज हो गया था, नौरोजी ने इसका भी समर्थन किया। उन्होंने भारतीयों को स्वराज्य की शिक्षा दी। उन्होंने स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा, बहिष्कार तथा औपनिवेशिक स्वराज्य का समर्थन किया।

दादाभाई नौरोजी के समाजवादी विचार

दादाभाई नौरोजी कई वर्ष तक इंगलैण्ड में रहे। उस समय इंगलैण्ड में समाजवादी आन्दोलन चल रहा था। दादाभाई की सहानुभूति श्रमिक वर्ग के साथ थी। उनका यह विश्वास था कि समाजवादी भावना शीघ्र ही अन्तर्राष्ट्रीय रूप धारण कर लेगी। उन्होंने ब्रिटिश समाजवादियों से सम्पर्क भी स्थापित किया। 1904 में उन्होंने एमस्टरडम में हुए "अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन" में भी भाग लिया। उन्होंने इस

सम्मेलन में ब्रिटिश शासन नीति की आलोचना की और उसकी शोषण नीति का विरोध किया। उन्होंने वृद्धावस्था में पेंशन देने की व्यवस्था का समर्थन किया। इस प्रकार वे स्पष्टतः एक समाजवादी तो न थे किन्तु उनमें कुछ हद तक समाजवादी भावनायें अवश्य विद्यमान थीं। वे शोषण के विरोधी और श्रमिक हितैषी थे।

निष्कर्ष :

दादाभाई नौरोजी भारतीय इतिहास में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्हें श्भारत का वृद्ध पितामहश कहा गया है। वे महान राजनीतिक विचारक तथा कर्मठ नेता थे। वे एक ठोस यथार्थवादी अर्थशास्त्री, समाज–सुधारक तथा राष्ट्रवादी विचारक थे। उनका शोषण का सिद्धान्त (क्तंपद जीमवतल) भारतीय राष्ट्रीयता के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग था। उन्होंने भारतीय राजनीति का आर्थिक विश्लेषण कर, सूक्ष्म दृष्टि से राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता, आर. सी. : (1965) सोशियलिज्म, डमोक्रेसी एण्ड इंडिया, रामप्रसाद एण्ड संस आगरा।
2. वर्मा, वी.पी. : (1967) मॉडर्न इंडियन पॉलिटिकल लक्ष्मीनारायण, आगरा।
3. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा : (1971) आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।
4. पी.के. त्यागी : (2006) भारतीय राजनीतिक विचारक, विश्वकर्मा, पब्लिकेशन्स नई दिल्ली।
5. गिरीश मल्होत्रा : (2006) मॉडर्न इंडियन पॉलिटिकल थिंकर्स , मुरारीलाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली।
6. धरमचंद जैन कैलाश दरोगा, (2009) आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
7. राधाकिशन : (2012) भारतीय राजनीतिक विचारक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा।
8. अली मुख्तार : (2017) भारतीय राजनीतिक विचारक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं।
9. धरमचंद जैन कैलाश दरोगा : (2018) आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर।
10. सी.एम. सरस्वती : (2018) भारतीय राजनीतिक चिंतन, मीनाक्षी प्रकाशन, मेरठ।
11. रामरतन, रुचि त्यागी, : (2019) भारतीय राजनीतिक चिंतन, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा।
12. ओमप्रकाश, : (2003) राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा।
13. ओम प्रकाश गाबा, : (2003) भारतीय राजनीतिक विचारक, मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।
14. पुष्पा बिरयानी व राजेश्वरी सक्सेना, : (2002) भारतीय राजनीतिक विचारक, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
15. वर्मा, वी.पी., : (2003) आधुनिक भारतीय राजनीतिक एवं सामाजिक चिंतन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
16. मजूमदार आर.सी. : (1943) 'दादाभाई नौरोजी एक महान नेता', भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही, नई दिल्ली, भारत।
17. गाडगिल डी.आर. : (1955) 'दादाभाई नौरोजी के आर्थिक विचार' अर्थशास्त्रीय और राजनीतिक साप्ताहिक, मुंबई, भारत।

18. वाकणकर एस.आर. : (1972) दादाभाई नौरोजी और सामाजिक न्याय, सामाजिक न्याय, मुंबई, भारत।

19. Mukherjee, Sumita. '"Narrow-majority' and 'Bow-and-agree': Public Attitudes Towards the Elections of the First Asian MPs in Britain, Dadabhai Naoroji and Mancherjee Merwanjee Bhownaggree, 1885–1906" (PDF). Journal of the Oxford University History Society (2 (Michaelmas 2004)).

20. https://hi.wikipedia.org/wiki